मुंशी प्रेमचंद की जयंती

चर्चा में क्यों?

मुंशी प्रेमचंद की **145वीं जयंती की पूर्व संध्या** पर **पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव** ने प्रेमचंद और **डाक परिवार के संबंध** को रेखांकित किया।

- उन्होंने कहा कि प्रेमचंद की आदर्शवाद से यथार्थवाद की यात्रा उनके साहित्य को आज के **सामाजिक परिवेश** में विशेषकर गरीबी, जातिवाद, लिंग भेद तथा शोषण जैसे समकालीन मुद्दों के संदर्भ में, अत्यंत **प्रासंगिक** बनाती है।

मुख्य बिंदु

मुंशी प्रेमचंद के बारे में:

- **परिचय**
  - **मुंशी प्रेमचंद**, जिनका जन्म **31 जुलाई 1880** को **वाराणसी** के पास **लमही गाँव** में **धनपत राय श्रीवास्तव** के रूप में हुआ था, को हिंदी और उर्दू साहित्य में सबसे प्रभावशाली उपन्यासकारों, कहानीकारों और विचारकों में से एक माना जाता है।
  - प्रेमचंद ने पहली असफल शादी के बाद वर्ष 1906 में **शिवरानी देवी** (जो कि एक बाल विधवा थीं) से विवाह किया, जिसे उस समय क्रांतिकारी कदम माना गया।
  - उनकी मृत्यु के बाद उनकी पत्नी शिवरानी देवी ने **'प्रेमचंद घर में'** शीर्षक से एक **संस्मरण** लिखा।
- **प्रारंभिक जीवन और शिक्षा:**
  - प्रेमचंद के पिता **मुंशी अज़ायब लाल** डाक विभाग में **क्लर्क** थे, जबकि माता का नाम **आनंदी देवी** था।
  - उन्होंने बचपन में ही **उर्दू और फारसी** सीख ली थी और **अंग्रेज़ी शिक्षा** के लिये **मिशनरी स्कूल** में प्रवेश लिया।
  - उन्होंने वर्ष **1898 में मैट्रिक** की पढ़ाई पूरी की और वर्ष **1919 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय** से अंग्रेज़ी, फ़ारसी और इतिहास में **स्नातक की डिग्री** प्राप्त की।
- **कार्य-जीवन:**
  - वर्ष 1899 से 1921 तक प्रेमचंद ने एक **स्कूल शिक्षक** और **स्कूलों के उप-निरीक्षक** के रूप में कार्य किया।
  - वर्ष 1921 में गांधी जी के **असहयोग आंदोलन** के समर्थन में उन्होंने सरकारी सेवा से **त्यागपत्र** दे दिया।
- **साहित्यिक जीवन और उपनाम:**
  - शुरुआत में उन्होंने अपने बचपन के उपनाम **'नवाब राय'** से लेखन किया।
  - बाद में जब ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार ने वर्ष **1910 में उनके संग्रह 'सोज़-ए-वतन'** पर प्रतिबंध लगा दिया, तो उन्होंने **'प्रेमचंद'** नाम अपना लिया।
  - उनकी साहित्यिक प्रतिभा के कारण उन्हें समकालीन हिंदी लेखकों द्वारा **'उपन्यास सम्राट'** और **'कलम का जादूगर'** की उपाधि दी गई।.
- **साहित्य में योगदान:**
  - प्रेमचंद को हिंदी और उर्दू साहित्य में यथार्थवाद का अग्रदूत माना जाता है।
  - उन्हें 300 से अधिक लघु कथाएँ और 18 उपन्यास लिखे, जिनमें सबसे उल्लेखनीय हैं **'गोदान', 'कफन', 'पूस की रात' और 'पंच परमेश्वर'**, जो समाज और मानवीय भावनाओं की आलोचना के लिये **आज भी प्रासंगिक हैं।**
  - उन्होंने **'ज़माना', 'सरस्वती', 'माधुरी', 'मर्यादा', 'चाँद' और 'सुधा'** जैसी प्रमुख हिंदी और उर्दू पत्रिकाओं में योगदान दिया। उन्होंने प्रमुख हिंदी समाचार-पत्र **'जागरण'** और साहित्यिक पत्रिका **'हंस'** का संपादन और प्रकाशन भी किया।
  - प्रेमचंद ने **सरस्वती प्रेस** भी खरीदी, परंतु बाद में आर्थिक घाटे के कारण यह बंद हो गई।
  - इसके बाद वे **मुंबई चले गए** जहाँ उन्होंने **फिल्म पटकथाएँ लिखना** प्रारंभ किया।
- **आधुनिक मान्यता:**
  - प्रेमचंद की **साहित्यिक विरासत** आज भी उतनी ही **समृद्ध** है। उनकी स्मृति में साहित्य अकादमी द्वारा 2005 में **'प्रेमचंद फैलोशिप'** की स्थापना की गई।
  - उनकी अनेक कृतियों पर **फिल्में बनाई गईं**, जिनमें विशेष रूप से **सत्यजीत रे** की फिल्म **'शतरंज के खिलाड़ी' (1977)** उल्लेखनीय है।
  - प्रेमचंद की कहानियाँ अनेक **भारतीय एवं अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं** में अनुवादित की गईं, जिससे वे एक **वैश्विक** साहित्यिक प्रतीक के रूप में स्थापित हुए।
  - हिंदी साहित्य में वर्ष **1918 से 1936** का काल **'प्रेमचंद युग'** कहलाता है। इस अवधि में उनके साहित्य ने लगातार **सामाजिक न्याय,**

[समानता और स्वतंत्रता](#) जैसे विषयों को उठाया, जो आज भी **प्रासंगिक** हैं।
  - भारतीय साहित्य और समाज में उनके अ**मूल्य योगदान के सम्मान में** डाक विभाग ने वर्ष 1980 में एक स्मारक **डाक टिकट** जारी किया।
- **अंतिम वर्ष और विरासत:**
  - **प्रेमचंद वर्ष 1936** में **अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ** के पहले अध्यक्ष चुने गए।
  - **8 अक्तूबर, 1936 को** 56 वर्ष की आयु में **[वाराणसी](#)** में उनका निधन हो गया।

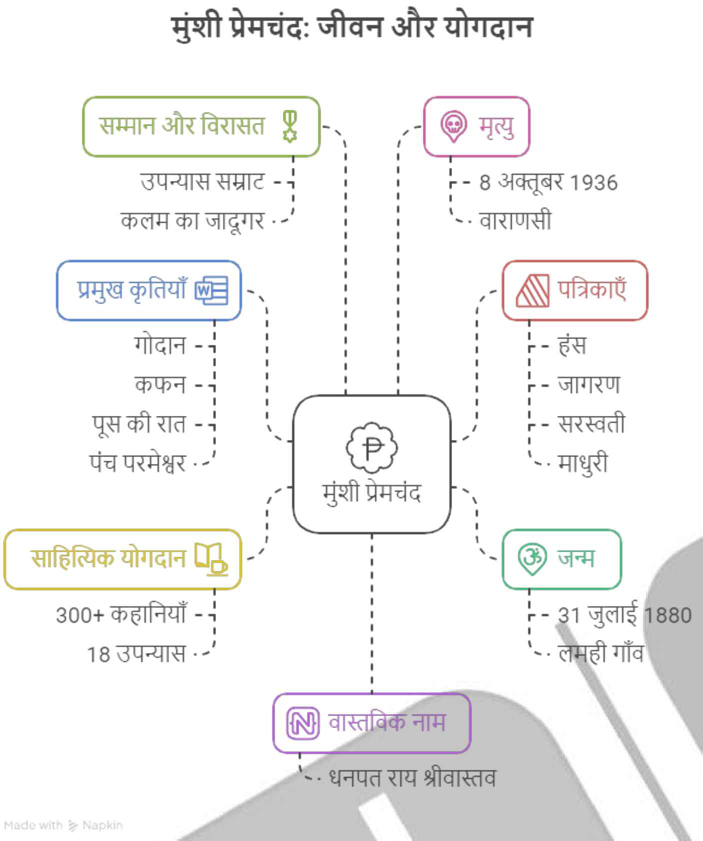

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/first-state-to-adopt-ai-in-road-safety-1